दिनांक 24.06.74 की अव्यक्त वाणी पर आधारित मुरली कविता

पूज्य योगेश्वर शिवबाबा बच्चों से मिलने आया
राजयोगी बनाने के लिए हम सबको समझाया

बच्चों पहले भोगी जीवन से पूरे ही मर जाओ
ब्रह्माकुमार कुमारी का टाइटल बाप से पाओ

योगी के हर टाइटल की बच्चों लिस्ट बनाओ
कितने किए हैं धारण खुद को जांचते जाओ

सहजयोग में जब खुद को मजबूत बनाओगे
राजयोगी का टाइटल तब ही बाप से पाओगे

राजयोगी का हर लक्षण जीवन में तुम लाओ
बच्चों अपने आपको पास विद ऑनर बनाओ

बच्चों अपनी निंद्रा को तुम योगयुक्त बनाओ
पार्ट समाप्त कर तुम परमधाम में सोने जाओ

अपनी सर्व कर्मेन्द्रियां श्रीमत प्रमाण चलाओ
प्रथम श्रेणी के कर्मयोगी खुद को तुम बनाओ

सच्चाई से जो बच्चे करते हैं बुद्धि की सफाई
निर्णय शक्ति द्वारा उन बच्चों ने सफलता पाई

बच्चों तुम्हारा ये ब्राह्मण जीवन है बड़ा महान
कर लो अपने संगमयुगी श्रेष्ठ पार्ट की पहचान

अपनी श्रेष्ठ पोजीशन को साधारण ना बनाओ
देहभान वश अपना निजी स्वरूप ना भुलाओ

दृढ़ता का अभाव बच्चों को देहभान में लाता
इसीलिए सदाकाल का परिवर्तन नहीं हो पाता

अपनी महानता को जब जब तुम भुलाते हो
इसी कमजोरी के वश हर बार धोखा खाते हो

श्रेष्ठ स्मृति की सीट पर तुम सेट होते जाओ
अपने सर्व संस्कारों का परिवर्तन करते जाओ